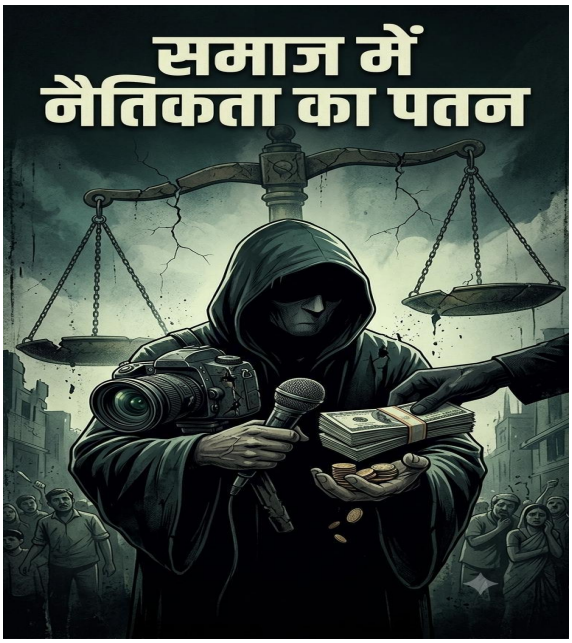

समाज में नैतिकता का पतन: धर्म, जन-भावनाओं और स्वार्थ का व्यापार

लेखक: डॉ सैयद नासिर शाह

मानव समाज की बुनियाद विश्वास, सच्चाई और आपसी सम्मान पर टिकी होती है। लेकिन जब इस बुनियाद में स्वार्थ, लालच और झूठ की दीमक लग जाती है, तो समाज का पूरा ढांचा चरमराने लगता है। आज के दौर में हम एक ऐसे अलार्मिंग (चिंताजनक) दौर से गुजर रहे हैं, जहां कुछ लोग पत्रकारिता, समाज सेवा और धर्म का नकाब ओढ़कर अपनी तिजोरियां भर रहे हैं। ऐसे लोगों के दिलों से 'खौफ-ए-खुदा' (ईश्वर का भय) पूरी तरह से खत्म हो चुका है। वे भूल जाते हैं कि अवाम के जज्बातों से खेलकर और हराम की कमाई से चलाया गया घर कभी सुकून और बरकत नहीं ला सकता।

पत्रकारिता के पवित्र पेशे का चीरहरण

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। एक सच्चे पत्रकार का काम समाज की बुराइयों को सामने लाना, मजलूमों की आवाज बनना और सच का आइना दिखाना होता है। लेकिन वर्तमान में सोशल मीडिया के दौर ने कुछ ऐसे असामाजिक तत्वों को भी एक मंच दे दिया है, जिनका असल मकसद पत्रकारिता नहीं, बल्कि डिजिटल गुंडागर्दी और वसूली है।

- **ब्लैकमेलिंग का हथियार:** बिना किसी वैध पंजीकरण या सरकारी मान्यता के, खुद को स्वयंभू पत्रकार घोषित कर लेना आज एक फैशन बन गया है। ऐसे लोग अपने कैमरे और माइक का इस्तेमाल लोगों को डराने, चरित्र-हनन (Character Assassination) करने और सफेदपोशों से अवैध वसूली के लिए करते हैं।

- **फर्जी खबरें और सनसनी:** सिर्फ व्यूज, लाइक्स और सस्ती शोहरत पाने के लिए मनगढ़ंत खबरें फैलाई जाती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी कलम और आवाज को ब्लैकमेलिंग का औजार बना ले, तो वह पत्रकार नहीं बल्कि समाज का सबसे बड़ा दुश्मन होता है।

जज्बातों से खिलवाड़ और चंदे के नाम पर लूट

समाज में हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो नेकी और भलाई के कामों के लिए अपना पैसा दान करने को तैयार रहते हैं। लेकिन जब कुछ ठग इस नेकनीयती का फायदा उठाते हैं, तो यह सीधे तौर पर अवाम के भरोसे का कत्ल है।

- **फर्जी अभियानों का जाल:** 'गरीबों का अस्पताल', 'शहर की सफाई', या 'जनता के कोष' जैसे लुभावने नाम देकर भोले-भाले लोगों से लाखों रुपये का चंदा

इकट्ठा किया जाता है। एआई (AI) और आधुनिक तकनीक से फर्जी तस्वीरें बनाकर लोगों की हमदर्दी बटोरी जाती है।

- **पारदर्शिता का अभाव:** जब कोई कानूनी ट्रस्ट या संस्था नहीं होती, तो जनता के खून-पसीने की कमाई सीधे व्यक्तिगत खातों में जाती है। इस्लाम और दुनिया के हर धर्म में अमानत में खयानत (धोखाधड़ी) को सबसे बड़ा गुनाह माना गया है। जो लोग जनता के पैसे को गबन करके अपने परिवारों का पेट पालते हैं, वे वास्तव में अपने घरों में आग भर रहे हैं।

मुकद्दस (पवित्र) जगहों और वक्फ संपत्तियों पर कब्जा

इस्लाम में 'वक्फ' की गई संपत्ति सीधे तौर पर अल्लाह की मिलकियत (स्वामित्व) मानी जाती है। वक्फ की संपत्तियों, जैसे कि ईदगाह, मस्जिद या कब्रिस्तान के रखरखाव के लिए बाकायदा कमेटियां और बोर्ड होते हैं।

- **स्वयंभू रहनुमाई का ढोंग:** जब कोई आम व्यक्ति बिना किसी कानूनी अधिकार, वक्फ बोर्ड की मंजूरी या इंजीनियरिंग ले-आउट के ऐतिहासिक और धार्मिक संपत्तियों के फैसले खुद लेने लगे, तो यह घोर निंदनीय है।
- **ताकत का दुरुपयोग:** रातों-रात ताले तोड़कर, बिना मंजूरी के निर्माण कार्य शुरू कर देना, और खुद को शरीयत या उलेमाओं से ऊपर समझना, एक ऐसी मानसिक बीमारी है जो अहंकार (तकब्बुर) से पैदा होती है। अल्लाह को तकब्बुर सख्त नापसंद है।

उलेमा-ए-दीन का अपमान और 'फितना' (अशांति) फैलाना

किसी भी शहर की एक रूहानी पहचान होती है, जो वहां के बुजुर्गों, शिक्षण संस्थानों और उलेमाओं की वजह से होती है। जो लोग समाज में इज्जत नहीं कमा पाते, वे अक्सर बड़े और सम्मानित लोगों पर कीचड़ उछालकर चर्चा में आने की कोशिश करते हैं।

- **बुजुर्गों की बेहुर्मती (अपमान):** स्वतंत्रता सेनानियों, ऐतिहासिक हस्तियों और प्रतिष्ठित संस्थानों के खिलाफ अभद्र भाषा का इस्तेमाल करना एक गिरी हुई मानसिकता का परिचायक है। जो कौम अपने बुजुर्गों और उलेमाओं की इज्जत करना छोड़ देती है, उसका पतन निश्चित है।
- **दंगा भड़काने की साजिश:** समाज में भ्रामक टिप्पणियां करके, दो गुटों या समुदायों के बीच नफरत पैदा करना सबसे खतरनाक कृत्य है। इस्लाम में 'फितना' (दंगा/अशांति) को कत्ल से भी बड़ा गुनाह बताया गया है। जब कोई व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ के लिए शहर का अमन-चैन दांव पर लगा देता है, तो उस पर सख्त से सख्त कानूनी शिकंजा कसा जाना चाहिए।

आखिर खौफ-ए-खुदा क्यों खत्म हो रहा है?

जब इंसान की आंखों पर दुनियावी दौलत और झूठी शान का पर्दा पड़ जाता है, तो उसे अल्लाह की पकड़ और आखिरत (परलोक) का हिसाब भूल जाता है।

1. **हराम की कमाई का असर:** जब इंसान हराम तरीकों (धोखा, ब्लैकमेलिंग, गबन) से कमाया हुआ पैसा खाता है, तो उसके दिल से नेकी और खौफ-ए-खुदा खत्म हो जाता है। हराम रिज़्क इंसान की सोच को भ्रष्ट कर देता है।
2. **जवाबदेही का एहसास न होना:** ऐसे लोग सोचते हैं कि वे अपने मोबाइल और कैमरे के दम पर कानून और प्रशासन से बच निकलेंगे, लेकिन वे भूल जाते हैं कि ऊपर वाले की लाठी में आवाज नहीं होती।
3. **समाज की खामोशी:** जब तक समाज के लोग, बुद्धिजीवी और प्रशासन खामोश रहते हैं, ऐसे असामाजिक तत्वों के हौसले बुलंद होते हैं।

निष्कर्ष: समाज और प्रशासन की जिम्मेदारी

अब वक्त आ गया है कि अवाम और प्रशासन दोनों अपनी नींद से जागें।

- **जनता की जागरूकता:** लोगों को चाहिए कि वे भावुक होकर किसी भी अनजान व्यक्ति के व्यक्तिगत खाते में चंदा न दें। दान हमेशा किसी रजिस्टर्ड, पारदर्शी और प्रामाणिक संस्था को ही दें।
- **प्रशासनिक कार्रवाई:** पुलिस और वक्फ बोर्ड को ऐसी अवैध गतिविधियों, चंदे की धांधली और सरकारी/वक्फ संपत्तियों पर कब्ज़े का तुरंत संज्ञान लेना चाहिए। ऐसे फर्जी पत्रकारों के बैंक खातों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और सख्त कानूनी कार्रवाई कर उन्हें सलाखों के पीछे भेजा जाना चाहिए ताकि समाज का सौहार्द और शांति बरकरार रहे।
- **अंतिम विचार:** जो लोग दूसरों के जज्बातों का कत्ल करके और अल्लाह से बेखौफ होकर अपना महल बनाते हैं, इतिहास गवाह है कि उनके वह महल बहुत जल्द रेत के घरौंदों की तरह ढह जाते हैं। इंसान को हमेशा याद रखना चाहिए कि दुनियावी अदालत से वह झूठ बोलकर बच सकता है, लेकिन खुदा की अदालत में कोई फर्जीवाड़ा काम नहीं आता।